This question paper contains 4 printed pages.]

1139 *आपका अनुक्रमांक .....*

B.A. (Hons.) बी.ए. (ऑनर्स) II Sem. **B**

HINDI – Paper V

हिन्दी – प्रश्नपत्र V

(उत्तर मध्यकालीन कविता)

(प्रवेशवर्ष 2011 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 75*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

***सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।*

1. "बिहारी के दोहे गागर में सागर हैं।" इस कथन का विवेचन कीजिए।

अथवा 15

देव के काव्य में अभिव्यक्त भाव-सौन्दर्य का विश्लेषण कीजिए।

2. भूषण के काव्य की मूल-संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा 15

[P.T.O.

गिरिधर कविराय की कुण्डलियों में अभिव्यक्त नैतिक आदर्शों की विवेचना कीजिए।

3. ''घनानंद प्रेम की पीर के कवि हैं।'' स्पष्ट कीजिए।

अथवा 15

द्विजदेव की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 8+8

(क) इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व ज्यौं सुअंभ पर
रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर
भूषण बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम-अंस पर कान्ह जिमि कंस पर
त्यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है।

(ख) रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अधानि कहूँ नहिं आन तिहारिये।
एकहीजीव हुतौ सु तौ वारयौ सुजान सकोचं और सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै घनआनँद बाबरी रीझ के हाथनि हारियै।

(ग) काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
रहिमन भँवरी के भए नदी सिरावत मौर॥

× × ×

रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँकें तीन॥

5. दिए गए निर्देशों के आधार पर निम्नलिखित पाठांशों में से किन्हीं **दो** का रचना कौशल (लगभग 150 शब्दों में) विश्लेषित कीजिए: 7+7

(क) **निर्देश : भक्ति-भाव का विश्लेषण**

कथा मैं न, कंथा मैं न, तीरथ के पंथा मैं न,
पोथी मैं, न पाथ मैं, न साथ की बसीति मैं,
जटा मैं न, मुंडन न, तिलक त्रिपुंडन न,
नदी-कूप-कुंडन अन्हान दान-रीति मैं।
पैठ-मठ-मंडल न, कुंडल, कमंडल न,
माला-दंड मैं न, देव देहरे की भीति मैं,
आपु ही अपार पारावार प्रभु पूरि रह्यो,
पाइए प्रगट परमेसुर प्रतीत मैं।

(ख) **निर्देश : बिम्ब सौन्दर्य**

मकराकृति गोपाल कैं सोहत कुंडल कान।
धरयौं मनौ हिथ-धर समरु, ड्यौढ़ी लसत निसान॥

× × ×

घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज।
जमुना तीर-तमाल-तरु-मिलित मालती कुंज॥

× × ×

जटिल नीलमनि जगमगति सींक सुहाई नाँक।
मनौ अली चंपक-कली बसि रसु लेतु निसाँक॥

(ग) **निर्देश : जीवन की व्यावहारिकता**

जो तुझको तोला झुके, तू झुक सेर पचीस
मरोर करै इक तस्सु भर, तू कीजै हाथ बईस
कीजे हाथ बईस, रीति व्यवहार की ऐसी
जैसा जैसा, देव, जगत में पूजा तैसी
कह गिरिधर कविराय, रोते के सँग रोते जो
हँसते सँग हँस मिलो, पुरुष हँस के बोले जो

- कुण्डलिया में जीवन एवं समाज के किस व्यवहार की ओर संकेत है ?